इकाई 10 भाषा का आंकलन

इकाई की रूपरेखा

10.0 प्रस्तावना

10.1 उद्देश्य

10.2 मूल्यांकन के प्रकार

10.3 मूल्यांकन के उद्देश्य

10.4 मूल्यांकन के सिद्धांत

10.5 एक अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम की विशेषताएँ

10.6 भाषा में मूल्यांकन

10.7 चार भाषायी कौशलों का मूल्यांकन करना

- 10.7.1 भाषा परीक्षण के अवयव
- 10.7.2 मौखिक कौशलों को जाँचना
- 10.7.3 पठन संबंधी परीक्षण
- 10.7.4 लेखन कौशलों की जाँच करना

10.8 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

10.9 सारांश

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.0 प्रस्तावना

मूल्यांकन किसी भी अध्ययन–अध्यापन कार्यक्रम का अभिन्न भाग है। जब कभी कोई प्रश्न पूछा जाता है और उसका उत्तर दिया जाता है, तो यह मूल्यांकन प्रक्रिया ही है। इस प्रकार अध्यापन और मूल्यांकन परस्पर आश्रित हैं। मूल्यांकन के बिना अध्ययन और अध्यापन संभव ही नहीं है। अध्यापन और मूल्यांकन दोनों उन अनुदेशनात्मक उद्देश्यों पर आधारित हैं और जो उन्हें दिशा प्रदान करते हैं।

अनुदेशनात्मक उद्देश्य वे वांछनीय व्यवहार हैं जिन्हें विद्यार्थियों में विकसित किया जाना अपेक्षित है। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा प्रदान की जाती है। यह भी देखना होता है कि बच्चे इन उद्देश्यों को प्राप्त कर पाए हैं या नहीं और किस हद तक ये उद्देश्य अर्जित किए गए हैं और इन्हीं के लिए मूल्यांकन किया जाता है।

अध्ययन–अध्यापन के तीन घटक – उद्देश्य, शिक्षण (अनुदेशी) प्रक्रिया या अधिगम अनुभव और मूल्यांकन, एक समाकलित नेटवर्क निर्मित करते हैं और इस नेटवर्क में प्रत्येक घटक एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं। मूल्यांकन द्वारा अध्यापक न केवल यह आंकलन करता है कि विद्यार्थी अध्यापन के उद्देश्यों को कितना प्राप्त कर पाया है बल्कि इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त साधनों और सामग्रियों, अध्ययन–उद्देश्यों, क्रियाविधियाँ कितनी कारगर व प्रभावशाली रहीं, इस बात का भी पता लग पाता है।

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों की चर्चा कर सकेंगे;
- मूल्यांकन के सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे;
- मूल्यांकन की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation – CCE) के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- विद्यार्थी भाषा को सीख पाएँ हैं या नहीं, इसका आंकलन करने के लिए परीक्षण तैयार कर पाएँगे।

10.2 मूल्यांकन के प्रकार

कक्षा में तीन प्रकार के मूल्यांकनों का प्रयोग किया जाता है। ये हैंः **संकलनात्मक मूल्यांकन (Summative evaluation), रचनात्मक मूल्यांकन (Formative evaluation) और नैदानिक मूल्यांकन (Diagnostic evaluation)**।

संकलनात्मक मूल्यांकन मूल्यांकन का वह प्रकार है जिससे सामान्यतया सभी परिचित हैं। यह शिक्षण सत्र, पाठ्यक्रम या कार्यक्रम के समाप्त होने पर किया जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थी की उपलब्धि की औपचारिक जाँच की जाती है। विद्यालयों में ली जाने वाली वार्षिक और अर्द्ध–वार्षिक परीक्षाएँ और लोक परीक्षाएँ इसी मूल्यांकन का उदाहरण हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रेड, श्रेणी प्रदान करना, उनसे वर्गीकृत करना, तुलना करना और कक्षा के लिए उत्तीर्ण (कक्षोन्नति) करना है। इसका प्रयोग प्रमाणन के लिए भी किया जाता है। संकलनात्मक मूल्यांकन का प्रयोग विशिष्ट पाठ्यक्रमों के प्रवेश के लिए या छात्रवृत्तियों के लिए विद्यार्थियों को चुनने के लिए भी किया जाता है। मूल्यांकन के आधार पर भावी प्रयासों में विद्यार्थियों की सफलता संबंधी पूर्वानुमान भी लगाया जा सकता है।

दूसरी ओर **रचनात्मक मूल्यांकन**, अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में अन्तर्निहित होता है। विद्यार्थी के अधिगम को बेहतर बनाने/सुधारने के उद्देश्य से यह मूल्यांकन शिक्षा के दौरान ही किया जाता है। अधिगम की कमजोरियों का पता लगाकर विद्यार्थियों की प्रगति के विषय में प्रतिपुष्टि प्रदान करना इस मूल्यांकन का उद्देश्य है। इसके बाद ही अध्यापक विद्यार्थियों के लिए सुधारार्थ (उपचारी) कार्यक्रमों का आयोजन कर सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन अध्यापक को शिक्षण विधियों की दक्षता संबंधी प्रतिपुष्टि भी प्रदान करता है ताकि शिक्षण में सुधार लाया जा सके। यह मूल्यांकन–पाठ्यक्रम विषयवस्तु तथा शिक्षण सामग्रियों की प्रभावोत्पादकता के संकेत भी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, एक इकाई को पढ़ाने और उस इकाई की परीक्षा लेने के बाद अध्यापक यह मूल्यांकन कर सकता है कि पढ़ाई गई विषयवस्तु उस स्तर के अनुरूप थी या नहीं और पाठ्यपुस्तक में उस विषयवस्तु के संबंध में किया गया वर्णन समुचित था जिसे विद्यार्थी आसानी से समझ सकें। इस प्रकार, रचनात्मक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण को बेहतर बनाना है।

रचनात्मक मूल्यांकन पूरे पाठ्यक्रम के दौरान निरंतर किया जाता है। यह मूल्यांकन इकाई–परीक्षाओं (इकाई के अंत में दिए गए अभ्यासों द्वारा)–जिसे प्रत्येक इकाई को पढ़ाए

जाने के बाद, लिया जा सकता है, अनौपचारिक कक्षा परीक्षाएँ, सत्रीय कार्यों और कक्षा की अन्य गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है।

संकलनात्मक मूल्यांकन औपचारिक स्वरूप का होता है, इसके विपरीत रचनात्मक मूल्यांकन अनौपचारिक स्वरूप का होता है इसमें अवलोकन, मौखिक परीक्षाओं, लिखित परीक्षाओं इत्यादि जैसे बहु–तकनीकों द्वारा किया जा सकता है।

नैदानिक मूल्यांकन मूल्यांकन का एक अन्य प्रकार है जो संकलनात्मक मूल्यांकन की तुलना में रचनात्मक मूल्यांकन से ज्यादा संबद्ध है। स्पष्ट रूप में कहें तो कक्षा में नैदानिक मूल्यांकन रचनात्मक मूल्यांकन के साथ–साथ किया जा सकता है। कभी–कभी नैदानिक उद्देश्य के लिए संकलनात्मक मूल्यांकन का प्रयोग भी किया जा सकता है।

नैदानिक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने या पढ़ने में कमजोर होने के अन्तर्निहित कारणों का पता लगाना है, लेकिन शिक्षण से पूर्व भी इसकी आवश्यकता होती है ताकि विद्यार्थी की उपलब्धि के स्तर का पता लगाकर उसे उचित रूप से महत्व दिया जा सके। इस प्रकार, नैदानिक मूल्यांकन शिक्षण देने के लिए आधार प्रदान करता है।

नैदानिक मूल्यांकन कई कारणों से कक्षा–शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम, विद्यार्थियों के मूल व्यवहार (entry behaviour) को जानना बहुत आवश्यक है अर्थात् वे सीखने के लिए तैयार हैं या नहीं या उनमें निरंतर नया सीखने के लिए अपेक्षित कौशल और जानकारी है या नहीं। दूसरा, यह विद्यार्थियों के उस स्तर को जानने में सहायक होता है जिस स्तर तक विद्यार्थी पहले ही विशिष्ट इकाई को सीख चुके हैं। स्तर जानने के पश्चात्, विद्यालय यह सुनिश्चित कर सकता है कि वह जो पढ़ाने या सिखाने जा रहा है वह मात्र पुनरावृत्ति तो नहीं होगी या क्या वह ज्ञान के संवर्धन में सहायक होगा। इसे जानना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि जहाँ एक ओर उच्च शिक्षा विद्यार्थियों के लिए यह रोचक सिद्ध हो सकता है वही दोहराव विद्यार्थियों का ध्यान भंग कर सकता है जो कक्षा में अव्यवस्था या अनुशासनहीनता का कारण बन सकती है।

तीसरा, नैदानिक मूल्यांकन अध्यापक को विद्यार्थियों को उनकी दक्षता के स्तर के अनुसार वर्गीकृत करने में सहायता करता है और जो फलस्वरूप उसे निम्न निष्पादन वाले और मंद–विद्यार्थियों के लिए सुधारात्मक शिक्षण (अनुदेशी) कार्यक्रम प्रदान करने में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, बच्चों की कमजोरी के लिए शिक्षण (अनुदेशी) विधियाँ या सामग्रियों के अतिरिक्त अन्य कई और कारण भी हो सकते हैं। ये कारण शारीरिक, भावात्मक या सामाजिक कारण भी हो सकते हैं जो सीखने में बाधक हो सकते हैं। निदान से इन समस्याओं के कारण उत्पन्न होने वाली अधिगम विसंगतियों के लक्षणों का ठीक–ठाक पता लगाया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है?

....

....

....

2) मूल्यांकन किस प्रकार अधिगम–अध्यापन का अभिन्न अंग है, स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

3) विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन कौन–से हैं? तालिकाबद्ध रूप में इनमें अंतर बताइए।

....

....

....

....

4) अध्यापक द्वारा नैदानिक मूल्यांकन किया जाना क्यों आवश्यक है?

....

....

....

....

10.3 मूल्यांकन के उद्देश्य

शिक्षा में मूल्यांकन कई कार्य करता है। इनमें से कुछ सर्वविदित कार्य हैं विद्यार्थियों को ग्रेड एवं श्रेणी प्रदान करना, उनको वर्गीकृत करना, उनकी तुलना करना और उनकी कक्षोन्नति अर्थात अगली कक्षा में भेजना (उत्तीर्ण करना)। इसका प्रयोग पाठ्यक्रम के पूरा होने को प्रमाणित करने, प्रवेश या छात्रवृत्ति के लिए विद्यार्थियों का चयन करने और विभिन्न प्रयासों में उनकी भावी सफलता का पूर्वानुमान लगाने के लिए भी किया जाता है। तथापि, ये सत्रांत मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य हैं। विद्यालय में मूल्यांकन का मूलभूत उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाना है और मूल्यांकन यह कार्य विद्यार्थी अधिगम, कक्षा शिक्षण, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम विषयवस्तु के औचित्य संबंधी प्रतिपुष्टि प्रदान करके करता है। जब विद्यार्थियों की ग़ैर–संज्ञानी (non-cognitive) क्षमताओं को विकसित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है तब यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में भी सहायता करता है।

अधिगम में सुधार करना

विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन सीधे विद्यार्थी के सीखने/सिखाने में सुधार करने में योगदान देता है। यह कई तरीकों से किया जाता है।

मूल्यांकन क्रियाविधियाँ विद्यार्थी को यह स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करती है कि वह क्या है, जिसे अध्यापक उसे सिखाना चाहता है। मूल्यांकन से प्राप्त प्रतिपुष्टि उसे उसकी प्रगति संबंधी मूर्त जानकारी प्रदान करती है। यह उसे भावी अधिगम गतिविधियों के लिए उसकी तैयारी के बारे में सूचित करती है। इस सतत मूल्यांकन के माध्यम से अध्यापक

प्रत्येक अवस्था पर अधिगम की सीमा को जान सकता है। अधिगम में यदि कोई कठिनाइयाँ या अन्तराल हो तो समुचित सुधारात्मक उपाय किए जा सकते हैं। जो विद्यार्थी अच्छी प्रगति दर्शाते हैं उनके लिए संवर्धन (enrichment) उपाय किए जा सकते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन, निदान और सुधार उपायों द्वारा शिक्षा को बेहतर बनाने में सहायक होता है। मूल्यांकन द्वारा अध्यापक विद्यार्थी के विकास पर सतत और नियमित रूप से नजर रख पाता है।

अधिगम का मूल्यांकन ही विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है। यदि कक्षा में मूल्यांकन न किया जाए तो शायद विद्यार्थी पढ़ें ही न। मूल्यांकन बच्चों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देता है और उन्हें अपनी श्रेष्ठता दर्शाने के लिए उत्प्रेरित करता है।

इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन के अन्य प्रयोग भी हैं जो माता–पिता के लिए उपयोगी हैं। परीक्षा–परिणाम के माध्यम से माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा संबंधी कमजोरियों और शक्तियों (संभावनाओं) को जान सकते हैं। यदि विद्यालय में मूल्यांकन व्यापक (comprehensive) तरीके से किया जाए तो विद्यालय माता–पिता को उनके बच्चे के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास के बारे में भी बता सकता है। इससे बच्चे की प्रगति के लिए अध्यापक और अभिभावक के बीच बेहतर सहयोग की भावना विकसित होती है। माता–पिता अपने बच्चे में कुछ–कुछ विशेष कमी होने पर सुधार संबंधी उपाय कर सकते हैं।

शिक्षण में सुधार

मूल्यांकन अध्यापकों की जवाबदेही को भी बढ़ावा दे सकता है। बच्चों के परीक्षा–परिणामों से पता चल सकता है कि बच्चे का खराब निष्पादन, खराब शिक्षण, त्रुटिपूर्ण क्रियाविधि (defective methodology) के कारण है या अध्यापकों के कक्षा में अनुपस्थित रहने के कारण या सख्तीपूर्ण (callousness) शिक्षण के कारण है। इस तरह, मूल्यांकन शिक्षण में सुधार करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में काम कर सकता है। अध्यापकों का व्यावसायिक विकास मूल्यांकन के माध्यम से प्राप्त होने वाली प्रतिपुष्टि से सीधे संबद्ध होता है। एक अध्यापक अपने द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों के परीक्षा–परिणाम के आधार पर ही प्रतिष्ठा व ख्याति हासिल करता है। यदि विद्यार्थियों के परीक्षा–परिणाम अच्छे व वांछनीय नहीं होते तब अध्यापक अपने शिक्षण की विधि को बदलने, या अपनी शिक्षण सामग्री को बेहतर बनाने, अपने ज्ञान को अद्यानुतन करने, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (refresher courses) करके कई उपागमों का अन्वेषण करने पर विचार कर सकते हैं। ये उपाय स्वतः उसका व्यावसायिक विकास करने में सहायक होंगे।

पाठ्यचर्या या विषयवस्तु का नवीनीकरण

मूल्यांकन से विषयवस्तु की प्रभाविता के संबंध में भी जानकारी मिलती है। विद्यार्थियों की परिपक्वता का स्तर विषयवस्तु के अनुरूप पर्याप्त विकसित होने के कारण पाठ्यचर्या के अंतर्गत कई ऐसे विषयवस्तु हो सकते हैं जो विद्यार्थियों को कठिन लग सकते हैं। अतः वे उन्हें सरलता से आत्मसात् नहीं कर पाते और इस तथ्य का पता मूल्यांकन तथा उसकी प्रतिपुष्टि द्वारा ही लगाया जा सकता है। विभिन्न विद्यार्थियों के मूल्यांकन की प्रतिपुष्टि द्वारा यदि यह निरंतर पाया जाता है कि पाठ्यचर्या का कोई विशिष्ट क्षेत्र उनके लिए उपयुक्त नहीं है तो उसमें सुधार किए जा सकते हैं। ऐसी जानकारी पाठ्यक्रम के पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों के औचित्य का पता लगाने में भी सहायक होती है। इस तरह, मूल्यांकन पाठ्यचर्या में संशोधन करने का आधार प्रदान कर सकता है।

ग़ैर–संज्ञानी क्षमताओं का विकास

आज के विश्व में बौद्धिक शक्तियों का विकास पर्याप्त नहीं है। सामाजिक बुद्धि, भावात्मक बुद्धि और व्यक्तित्व के शारीरिक पहलुओं का विकास भी अब उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना मानसिक बुद्धि का विकास महत्व रखता है। शिक्षा का प्रमुख सरोकार मानव–व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है और ऐसा विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ–साथ उनकी ग़ैर–संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करके किया जा सकता है। यह केवल तभी सुनिश्चित किया जा सकता है कि जब विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के इन पहलुओं का मूल्यांकन करने की पद्धति को अपनाता है। व्यापक मूल्यांकन में मानव व्यक्तित्व के ग़ैर–विद्यालयी क्षेत्रों – जैसे विद्यार्थियों की सामाजिक–व्यक्तिगत विशेषताएँ (गुण), रूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, मूल्य और शारीरिक वृद्धि का मूल्यांकन शामिल है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में इनका निरंतर विकास व मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

जैसा कि अग्रवाल (1988) ने अवलोकन किया कि भारतीय संदर्भ में ग़ैर–विद्यालयी क्षेत्रों के मूल्यांकन से विद्यार्थियों के न केवल छिपे हुए व अज्ञात गुणों का पता चलता है बल्कि यह उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करता है। ऐसे गुण, विशेषताएँ, अभिवृत्तियाँ और मूल्य हैं जिन्हें जीवन में सफलता अर्जित करने के लिए विकसित करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, नियमितता, समय की पाबंदी, अनुशासन, पहल करने की प्रवृत्ति, परिश्रम और सहयोग ऐसे गुण हैं जो व्यावसायिक जीवन में महत्व रखते हैं। अन्य लोगों के लिए सम्मान–भावना, सत्यता, भावात्मक स्थायित्व के गुण खुशहाल निजी जीवन के लिए अपेक्षित हैं।

अध्यापक को विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, रुचियों, मूल्यों और सामान्य बनावट के बारे में जानकारी होना महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वह इस जानकारी का प्रयोग विद्यार्थियों की शिक्षा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने और उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं। विद्यार्थियों की शिक्षा संबंधी समस्याएँ अक्सर उनके व्यक्तित्व से संबद्ध होती हैं। ये विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, मूल्यों और रुचियों से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि अध्यापक यह जानता है कि सचिन की खेलकूद में रुचि है तो उसके पठन को सुधारने के लिए वह खेलकूद से जुड़ी पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए दे सकता है। इसी तरह अध्यापक अपने विद्यार्थियों की रुचियों और अभिवृत्तियों का सदुपयोग कर सकते हैं (मेहरस एवं लेहमैन, 1987)।

10.4 मूल्यांकन के सिद्धांत

मूल्यांकन मात्र एक ऐसी प्रक्रिया नहीं है जहाँ परीक्षणों की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में, यह इस तथ्य को निर्धारित करने की एक प्रक्रिया है कि विद्यार्थी शिक्षा संबंधी उद्देश्यों को कितना प्राप्त कर पाया है। कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो मूल्यांकन की प्रक्रिया को दिशा प्रदान कर सकते हैं और मूल्यांकन करने की विशिष्ट युक्ति या तकनीक को अपनाने का मानदंड भी बता सकते हैं। इनमें से हमने नीचे कुछ को सूचीबद्ध किया हैः

1) **क्या (किसका) मूल्यांकन किया जाना है? यह निर्धारित व स्पष्ट करना**

   मूल्यांकनकर्ता क्या (किसका) मूल्यांकन करना चाहता/चाहती है यह स्पष्ट हो जाने पर ही मूल्यांकन के लिए समुचित विधि का चयन किया जा सकता है। अतः मूल्यांकन की प्रक्रिया में पहला चरण मूल्यांकन के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित (परिभाषित) करना है।

2) **उद्देश्यों के संदर्भ में मूल्यांकन तकनीकों का चयन करना**

मूल्यांकन करने की कई तकनीकें उपलब्ध हैं। हो सकता है कोई एक तकनीक कुछ मामलों में उचित और उपयुक्त हो। जबकि वही तकनीक हो सकता है कि अन्य मामलों में उपयुक्त न हो। अतः मूल्यांकनकर्ता को उसी तकनीक का चयन करना चाहिए जो उस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए सर्वोत्तम हो। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी की विचारों और तथ्यों को अनुच्छेदों में व्यवस्थित करने की योग्यता के शिक्षण उद्देश्यों का मूल्यांकन किया जाना हो तब लिखित परीक्षण सर्वोत्तम तकनीक होगी। यदि विषयवस्तु को अच्छी तरह से समझते हुए किसी अनुच्छेद को सुनने संबंधी परीक्षा ली जानी है, तो मौखिक परीक्षा तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है।

3) **व्यापक मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों का सम्मिश्रण**

विद्यार्थियों की उपलब्धि के सभी पहलुओं का व्यापक ढंग से मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों की आवश्यकता होती है। चूँकि शिक्षण उद्देश्यों और विषयवस्तु के विभिन्न क्षेत्र हैं जिनके आधार पर विद्यार्थी की उपलब्धि का मूल्यांकन किया जाता है, ऐसे में विद्यार्थी की उपलब्धि का प्रभावोत्पादक मूल्यांकन करने के लिए केवल एक तकनीक पर्याप्त नहीं होती है। अतः मूल्यांकन को व्यापक/बोधगम्य बनाने के लिए, विभिन्न उद्देश्यों के परीक्षण के लिए उनकी उपयुक्तता के आधार पर विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन प्रक्रियाओं को अपनाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, विभिन्न तरीकों का मिला–जुला कर प्रयोग करना, मूल्यांकनकर्ता को विभिन्न उद्देश्यों के संबंध में विद्यार्थी की उपलब्धि के विभिन्न पहलुओं के बारे में और अधिक साक्ष्य प्रदान करता है और मूल्यांकनकर्ता को विद्यार्थी की उपलब्धि का ज्यादा संगत मूल्यांकन करने में सहायता करता है क्योंकि जितने ज्यादा साक्ष्य होंगे उतना मूल्यांकन बेहतर होगा।

4) **विशिष्ट मूल्यांकन युक्ति का सार्थक और प्रभावी रूप से प्रयोग करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों की शक्तियों और सीमाओं को जानना**

मूल्यांकनकर्ता को उस युक्ति की शक्तियों और सीमाओं से अवगत होना चाहिए, उदाहरण के लिए, उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि निबंधात्मक प्रश्न के अंक विषयपरकता के आधार पर दिए जाने चाहिए या वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में हमेशा अनुमान लगाने की संभावना होती है। उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि विभिन्न मूल्यांकन प्रक्रिया विधियों में कितनी भी सावधानी क्यों न बरती जाए फिर भी ये केवल सन्निकट परिणाम प्रदान कर सकती है। यदि मूल्यांकनकर्ता साधनों (युक्तियों) की सीमाओं से परिचित है तो वह अपने लक्ष्य को सार्थक रूप से प्राप्त करने के लिए कुशलतापूर्वक उनका प्रयोग और निर्माण करके उनकी कमजोरियों को कम कर सकता है।

5) **मूल्यांकन लक्ष्य का साधन है, न कि अपने आप में लक्ष्य है।**

अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया में, मूल्यांकन किसी उद्देश्य को सामने रखकर किया जाना चाहिए न कि केवल मूल्यांकन करने के लिए मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जानकारी का प्रयोग किए बिना विद्यार्थियों की परीक्षा लेना, पुस्तिकाओं की जाँच करके अंक प्रदान करना और आँकड़े एकत्रित करना एक निरर्थक प्रयास है। वास्तव में, शिक्षण को आगे बढ़ाने में नई सामग्रियों और विधियों को अपनाने, सुधारात्मक अध्यापन की अनिवार्यतया और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन इत्यादि के संबंध में निर्णय लेने के लिए मूल्यांकन का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) विद्यालय में मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

....

....

....

....

2) मूल्यांकन विद्यार्थियों की ग़ैर–संज्ञानात्मक योग्यताओं को विकसित करने में किस प्रकार सहायक होता है?

....

....

....

....

3) मूल्यांकन के सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

4) मूल्यांकन तकनीकों का मिला–जुला कर प्रयोग करना (सम्मिश्रण) मूल्यांकन में किस प्रकार सहायक होता है?

....

....

....

....

10.5 एक अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम की विशेषताएँ

मूल्यांकन का अर्थ, प्रकार और उद्देश्य हमें विद्यालयों में अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम की निम्नलिखित विशेषताओं के बारे में बताते हैं:

मूल्यांकन उद्देश्य आधारित प्रक्रिया है

विद्यालय में हम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास और उसकी शैक्षिक उपलब्धियाँ जानने में दिलचस्पी रखते हैं। अभिप्रेत अधिगम परिणामी या शिक्षण उद्देश्य के संदर्भ में ये तथ्य प्रतिबिम्बित होते हैं। मूल्यांकन सार्थक हो, इसके लिए सभी विद्यालयों में किए जाने वाला सारा मूल्यांकन इन्हीं शिक्षण (अनुदेशी) उद्देश्यों पर आधारित होना चाहिए। ये उद्देश्य अध्यापक और मूल्यांकन दोनों को दिशा प्रदान करते हैं। ये उद्देश्य प्राप्त किए गए हैं या नहीं और यदि प्राप्त किए गए हैं तो कितने/किस हद तक, यह जानने के लिए अनुदेशन (instruction) दिया जाता है। मूल्यांकन तकनीकों और साधनों का चयन मूल्यांकन किए जाने वाले उद्देश्यों पर भी आधारित होता है।

मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है

चूँकि वृद्धि एक सतत प्रक्रिया है अतः अध्यापक को समय–समय पर होने वाले परिवर्तनों की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। अतः विद्यार्थियों की वृद्धि और विकास संबंधी विश्वसनीय साक्ष्य प्राप्त करने के लिए सतत मूल्यांकन अनिवार्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मूल्यांकन अध्यापन में समाविष्ट होना चाहिए। जब तक यह अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया में अन्तर्निहित नहीं होता है तब तक या विद्यार्थियों की कठिनाइयों का निदान करने और सुधारात्मक शिक्षण के लिए अवसर प्रदान करने में सहायता नहीं कर सकता। अधिगम में सुधार सतत मूल्यांकन के बिना संभव नहीं है। अतः मूल्यांकन को पाठ्यक्रम गतिविधि का लक्ष्य नहीं मानना चाहिए।

मूल्यांकन व्यापक प्रक्रिया है

विद्यार्थियों की बौद्धिक, भावात्मक और शारीरिक वृद्धि के विभिन्न आयाम होते हैं। ये पहलू विभिन्न उद्देश्यों के रूप में नियमित होते हैं। जब तक मूल्यांकन सभी पहलुओं संबंधी सूचना प्रदान नहीं करता तब तक इसे व्यापक नहीं माना जा सकता। इस प्रकार एक अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम में विद्यार्थी की वृद्धि के शैक्षिक और ग़ैर–शैक्षिक पहलुओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

सभी संभावित उद्देश्यों का मूल्यांकन करने के अतिरिक्त व्यापक मूल्यांकन में व्यक्तित्व वृद्धि के विभिन्न पहलुओं संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए तरह–तरह के साधनों और तकनीकों का प्रयोग करना शामिल है। इनमें न केवल लिखित और मौखिक परीक्षाएँ बल्कि अवलोकन (प्रेक्षण) तकनीक, साक्षात्कार, प्रयोगात्मक परीक्षाएँ, श्रेणी–निर्धारित पैमाने, सूचियाँ, अनुसूचियों, प्रोफाइल (पार्श्विका) इत्यादि शामिल हैं।

मूल्यांकन एक सहयोगी प्रक्रिया है

चूँकि व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी–विकास के सभी पहलुओं का मूल्यांकन अपेक्षित है अतः अध्यापक अकेले विद्यार्थी की वृद्धि संबंधी सभी अपेक्षित प्रभाव साक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता। सामाजिक संबंधों, भावात्मक व्यवहार, पहल करने की प्रवृत्ति, वैज्ञानिक अभिवृत्तियों, सामाजिक अभिवृत्तियों, पसंद और नापसंद, के संबंध में विद्यार्थी के अपने संगी–साथियों, माता–पिता, अन्य अध्यापकों तथा उन सभी का सहयोग अपेक्षित है जो उसको बढ़ाते हो और विकसित होते देखते हैं। इस तरह एक अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम के लिए विभिन्न व्यक्तियों और एजेंसियों का सहयोग अनिवार्य है।

मूल्यांकन एक गतिशील प्रक्रिया है

मूल्यांकन अनुदेशात्मक उद्देश्यों पर आधारित होता है परंतु इसके साथ ही साथ मूल्यांकन यह जानने में भी सहायता करता है कि ये उद्देश्य विद्यार्थियों के विशिष्ट समूह के लिए समुचित हैं या नहीं। इसी तरह, मूल्यांकन कक्षा में प्रदान किए गए अधिगम अनुभव पर आधारित होता है, अतः यह उस अधिगम अनुभव की प्रभाविता का प्रमाण देता है। इस प्रकार मूल्यांकन नियमित प्रतिपुष्टि द्वारा संपूर्ण अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया को प्रामाणिक बनाता है। एक अच्छा मूल्यांकन कार्यक्रम गतिशील होता है और शैक्षिक प्रक्रिया में निरंतर सुधार करने की ओर अग्रसर करता है।

मूल्यांकन एक निर्णयन प्रक्रिया है

अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण पर मूल्यांकन (समीक्षा) आवश्यक है। अनुदेश प्रारंभ करने से पहले कार्यनीतियों, अधिगम सामग्री और यहाँ तक की शिक्षण के समुचित उद्देश्यों संबंधी निर्णय लेने के लिए विद्यार्थियों के मूल व्यवहार को निर्धारित करना आवश्यक है। अनुदेश के दौरान विद्यार्थियों की बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक वृद्धि का सतत मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि आप विभिन्न सुधारात्मक और संवर्धन कार्यक्रम संबंधी निर्णय समय पर ले सकें। इस उद्देश्य के लिए नैदानिक (diagnostic) और रचनात्मक (formative) मूल्यांकन साथ–साथ करने चाहिए।

सत्र के अंत में, विद्यार्थियों को वर्गीकृत करने, ग्रेड देने, संवर्धित और प्रमाणित करने के लिए संकलनात्मक (summative) मूल्यांकन किया जाता है। यह मूल्यांकन अध्यापकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक भविष्य की विभिन्न अवस्थाओं में और निर्णय लेने में सहायता करता है। यदि विद्यालय कार्यक्रम के इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखता है तो निस्संदेह यह शिक्षा में गुणात्मक सुधार ला सकता है। जो विद्यालय मूल्यांकन व्यवहारों का अनुपालन करते हैं वे वास्तव में प्रभावकारी विद्यालय सिद्ध हो सकते हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) शिक्षण की विभिन्न अवस्थाओं में निर्णय लेने के लिए मूल्यांकन का प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है?

....

....

....

....

2) विद्यालय के अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

10.6 भाषा में मूल्यांकन

भाषा–शिक्षण के मूल्यांकन कार्यक्रम की योजना ऊपर वर्णित मूल्यांकन के सिद्धांतों तथा विषय के स्वरूप को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए।

भाषा एक कौशल आधारित विषय है जबकि सामाजिक विज्ञान विषयवस्तु आधारित विषय हैं और जिसमें प्रत्येक इकाई स्वतंत्र होती है, वह दूसरी इकाई से संबद्ध नहीं होती और पृथक इकाई का अध्ययन किया जा सकता है। भाषा–शिक्षण में कौशलों का उत्तरोत्तर विकसित किया जाना चाहिए, अर्थात् एक कौशल अगले कौशल का आधार होता है। ऐसी स्थिति में पाठ्यपुस्तक का प्रयोग संप्रेषण कौशलों को विकसित करने के माध्यम या साधन के रूप में ही किया जाता है और यह अपने आप मे लक्ष्य नहीं होता है अर्थात् भाषा–मूल्यांकन में पुस्तक की विषयवस्तु का ज्ञान महत्वपूर्ण नहीं है। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि क्या विद्यार्थी में सुनने, बोलने, पढ़ने (पठन) और लिखने (लेखन) योग्यताएँ विकसित हुई हैं या नहीं।

लक्षित भाषा के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, मूल्यांकन का प्रथम चरण उस भाषा के शिक्षण–उद्देश्यों को स्पष्ट व विशेष रूप से परिभाषित करता है। दूसरे, उस भाषा के अध्यापक को इस तथ्य से अवगत होना चाहिए कि किसी अन्य विषय की तुलना में भाषा–शिक्षण में मूल्यांकन का अवयव भी निहित होता है। चूँकि भाषा कौशल उत्तरोत्तर विकसित किए जाते हैं अतः इन कौशलों में विद्यार्थियों की दक्षता विकसित होने का मूल्यांकन सतत व नियमित रूप से किया जाना चाहिए ताकि भाषा में जोड़–तोड़ करने की योग्यता को धीरे–धीरे और दिन–प्रतिदिन सुधारा व बेहतर बनाया जा सके।

वास्तव में भाषा–अध्यापक हर समय अपने विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन स्वतः करता रहता है क्योंकि भाषा–शिक्षण में अधिकांश मूल्यांकन–युक्तियाँ, शिक्षण युक्तियाँ होती हैं।

भाषा के किसी विषय को पढ़ाने के लिए अध्यापक सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कई अभ्यास कक्षा में देता है, इन्हीं अभ्यासों का प्रयोग मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। तथापि, कुछ ऐसे भाग होते हैं जो शिक्षण अभ्यासों के लिए तो भले ही उपयोगी हों परंतु परीक्षण की दृष्टि में अच्छे या सही सिद्ध नहीं हो सकते। उदाहरण के लिए, तालिकाएँ उन्हें शिक्षण अभ्यास हैं क्योंकि विद्यार्थी इसमें पैटर्न संबंधी बहुत अभ्यास कर सकते हैं परंतु यह एक अच्छी परीक्षण युक्ति नहीं है क्योंकि उपलब्धि परीक्षण में हमें केवल विद्यार्थियों की विशिष्ट पैटर्न को जोड़–तोड़ करने की क्षमता के एक नमूने की आवश्यकता होती है न कि उसी पैटर्न के 5–6 वाक्यों वाले पूरे अभ्यास की।

इसी प्रकार, निबंध लेखन एक अच्छी परीक्षण युक्ति है लेकिन यह युक्ति लिखना सिखाने के लिए बहुत अच्छी युक्ति नहीं है। कक्षा में निबंध लेखन ;बवउचवेपजपवद् तपजपदहद्ध सिखाते समय पूर्ण निबंध की अपेक्षा अनुच्छेद लिखना शायद अधिक उपयोगी होगा। चूँकि निबंध काफी लम्बा लिखा जाता है और इसमें अध्यापक को संशोधन बहुत करना पड़ता है, हो सकता है कि कक्षा में बार–बार टोकना या गलती बताना संभव न हो। इसलिए, भाषा–अध्यापक को परीक्षायुक्ति का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। यह युक्ति उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए और विषयवस्तु के क्षेत्रों की जाँच भी की जानी चाहिए।

अपने विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने के लिए अध्यापक को भिन्न–भिन्न उद्देश्यों के अनुरूप विविध परीक्षण तैयार करने होंगे। इस प्रकार हम अध्यापकों को प्रगति परीक्षण या अनौपचारिक कक्षा परीक्षा (टेस्ट), पाठ के समाप्त होने के बाद परीक्षण अथवा

इकाई परीक्षण, और उपलब्धि परीक्षण तैयार करने होंगे। ये परीक्षण विद्यार्थियों की प्रगति, उनकी कमजोरियों, उनकी समर्थताएँ, और विविध भाषायी योग्यताएँ विकसित करने में उनकी उपलब्धि की जाँच करने के लिए उपयोगी हो सकते हैं। परिणामों का प्रयोग न केवल विद्यार्थियों को कक्षोन्नति (promotion) या श्रेणीकरण (ranking) के लिए उपयोगी होगा बल्कि यह शिक्षण विधियों, इकाइयों के अनुक्रम, अभ्यास (drills) का स्वरूप, अभ्यासों इत्यादि में परिवर्तन करने संबंधी निर्णय लेने में भी उपयोगी होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) भाषा की पाठ्यपुस्तकों को केवल भाषा–कौशलों के विकास के लिए ही क्यों मानना चाहिए?

....

....

....

....

2) भाषा–शिक्षण में मूल्यांकन किस प्रकार अन्तर्निहित होता है? उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

10.7 चार भाषायी कौशलों का मूल्यांकन करना

अब प्रश्न यह उठता है कि प्रारंभिक अवस्था पर चार भाषायी कौशलों का मूल्यांकन करने के लिए किन कार्यनीतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। हमें क्या जाँचना है यह स्पष्ट हो जाने के बाद उसको जाँचने के लिए सबसे उपयुक्त तकनीक का पता लगाना होगा। मूल्यांकन की तीन प्रमुख तकनीकें हैं जिनका प्रयोग किया जा सकता है ये तीन तकनीकें हैं – मौखिक तकनीक, लिखित तकनीक और अवलोकन (प्रेक्षण)। भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में जाँच के लिए इन तकनीकों का प्रयोग अलग–अलग या इनको मिला–जुला कर किया जा सकता है।

10.7.1 भाषा परीक्षण के अवयव

भाषा को समझने की योग्यता और उस भाषा में अपनी बात कहने की योग्यता व्यक्ति की भाषा के अवयवों के ज्ञान पर बहुत ज्यादा आधारित होती है। भाषा के अवयवों के अंतर्गत ध्वनि–विज्ञान (phonology) ध्वनि प्रणाली (sound-system), शब्द–भंडार, अर्थ और संरचना आते हैं।

विद्यार्थी के मौखिक / श्रवण संबंधी कौशलों, पठन और लेखन संबंधी कौशलों की जाँच करते समय इन सभी अवयवों की जाँच साथ–साथ की जा सकती है।

ध्वनि विज्ञान के परीक्षण

भाषा का ध्वनि–विज्ञान भाषा की ध्वनि प्रणाली, उसके तनाव (stress), स्वर शैली अथवा अनुताल (intonation), और लय (rhythm) से संबद्ध है। प्राथमिक स्तर पर अध्यापक विद्यार्थियों के मौखिक कौशलों का परीक्षण करते समय इन अवयवों का अनौपचारिक रूप में आंकलन कर सकते हैं। परीक्षण के कुछ प्रकार नीचे दिए गए हैं:

क) **अल्पतम युग्म अथवा छोटे–छोटे जोड़े (Minimal pairs) :** इसमें विद्यार्थियों को अध्यापक द्वारा बोले गए शब्दों को दोहराने को कहा जाता है। यह अभ्यास, ध्वनि के भेद (sound discrimination) और मौखिक प्रस्तुति (oral production) की जाँच करने के लिए उपयोगी है, उदाहरण के लिए,

शब्दों को दोहराएँ : rip, reap; pull, pool; peep,beep, इत्यादि।

छोटे बच्चे भी वाक्यों, बाल कविताओं और तुकबंदी (jingles) को कठंस्थ याद कर सकते हैं।

ख) **श्रुतलेख (Dictation) :** प्राथमिक स्तर पर ध्वनि–भेद का परीक्षण करने के लिए प्रयुक्त होने वाला यह सर्वाधिक प्रचलित परीक्षण है। अध्यापक शब्द या वाक्य बोल करती है, और विद्यार्थी अपनी अभ्यास–पुस्तिका में उन्हें लिखते हैं। इस परीक्षण से न केवल उनकी वर्तनी बल्कि ध्वनि में भेदभाव के साथ–साथ विद्यार्थी की वाक्य–विन्यास संबंधी (व्याकरण सम्मत) (syntactic) योग्यता की भी जाँच हो जाती है।

ग) **वस्तुनिष्ठ परीक्षा (Objective type tests) :** यह नीचे के कक्षा स्तर पर चित्रों परीक्षा और तीसरी, चौथी कक्षा, इत्यादि के स्तर पर पेपर–पैंसिल परीक्षण हो सकती है। बच्चे को दो चित्र दिए जाते हैं और अध्यापक एक शब्द बोलता है। बच्चा उस शब्द से मेल खाने वाले चित्र पर सही का निशान लगाता है। उदाहरण के लिए अध्यापक द्वारा शिप (जहाज) और शीप (भेड़) के चित्र दिए जाते हैं। अध्यापक द्वारा "शिप" बोले जाने पर बच्चे समुचित चित्र पर सही का निशान लगाते हैं।

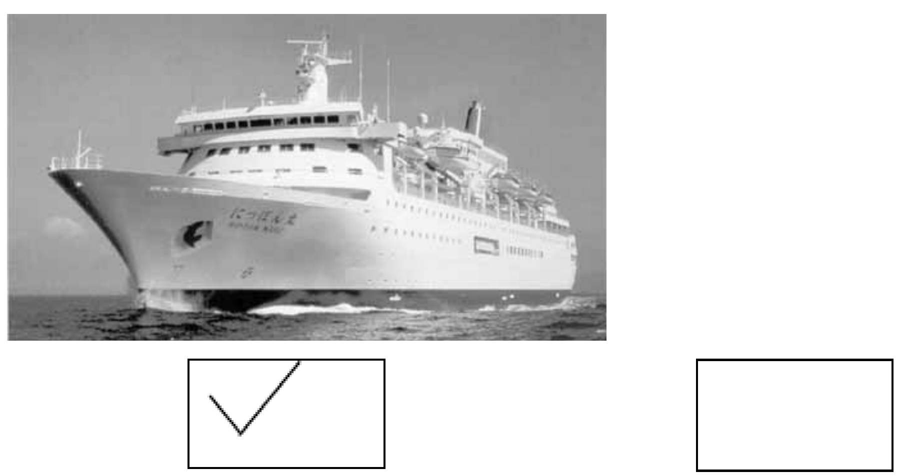

एक अन्य प्रकार के परीक्षण में विद्यार्थी को एक शीट दी जाती है जिस पर प्रत्येक प्रश्न के लिए दो से चार शब्द लिखे होते हैं। अध्यापक शब्द बोलता है और विद्यार्थी प्रत्येक कागज पर सही शब्द पर सही का निशान लगाता है। उदाहरण के लिएः

लिखित शब्दः ship, shape, shop, sheep

बोला गया शब्दः 'sheep'

शब्द भंडार का परीक्षण

शब्द भंडार प्रमुखतः शब्दों के अर्थ से संबद्ध है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को लक्ष्य भाषा का शब्द भंडार सीखना आवश्यक है। इसमें बच्चे को चित्र दिखाकर उससे यह पूछा कर कि यह क्या है या एक शब्द बोलकर बच्चे को सही चित्र की ओर इशारा करने के लिए कहा जाता है। लिखित परीक्षा में चीजों का मिलान कराया जा सकता है या बहुविकल्प मदों का प्रयोग किया जा सकता है। मिलान करने वाले प्रश्न का उदाहरण नीचे दिया गया हैः

कॉलम क		**कॉलम ख**
नाई (Barber)	क)	जो डबलरोटी, बिस्कुट इत्यादि बनाता है।
परिवेषक (Waiter)	ख)	जो किसी स्थान का प्रभारी होता है।
बेकर (Baker)	ग)	जो लोगों के बाल काटता है।
	घ)	जो होटल में खाना परोसता है।
	ङ)	जो बीमार की देखभाल करता है।

तीसरी, चौथी और पाँचवी कक्षाओं के स्तर पर शब्द भंडार परीक्षण का उद्देश्य बोलने और लिखने में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की बोधगम्यता और प्रस्तुति को जाँचना है। अतः शब्द भंडार का परीक्षण अपठित गद्यांशों के माध्यम से करके बच्चों की शब्द की संदर्भगतता (Word attack) का आंकलन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, अपठित गद्यांशों का अभ्यास शब्दों के उचित संदर्भ को भी बताता है। उदाहरण के लिएः

"The tigress sprang at Mr. Chin and knocked him down but he managed to wound it with his knife. Then he became unconscious. The tigress disappeared. Luckily for Mr. Chin a friend heard the noise of the fight and came to investigate. He found Mr. Chin lying unconscious."

1 Pick out from the passage the words that mean:

- i) to find out what happened
- ii) jumped

2 Pick out from the passage the word which is opposite of "unfortunately".

शब्द भंडार के प्रयोग का आंकलन बच्चों की मौखिक और लिखित रचना से भी किया जा सकता है।

संरचना–परीक्षण

संरचना विभिन्न वाक्य–प्रतिरूपों और व्याकरणिक रूपों से संबद्ध होती है। भाषा की मूल–संरचनाओं से परिचित होना भाषा को समझने व लिखने के लिए अनिवार्य है। इसलिए संरचनात्मक पदों का परीक्षण विद्यार्थी की सही व्याकरणिक रूपों को पहचानने और विभिन्न संरचनाओं में जोड़–तोड़ (फेरबदल करने) की योग्यता को जानने में सहायता करता है।

इन पदों को कुछ विशेषज्ञ पठन–पूर्व गतिविधियाँ मानते हैं इसलिए इनका औपचारिक रूप से मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

(क) **मौखिक संरचना परीक्षण**

विद्यार्थियों की मौखिक रूप में संरचनाओं की पकड़ को जाँचने के लिए कई विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इसके अंतर्गत प्रश्न पूछना एक प्रचलित विधि है। भिन्न–भिन्न संरचनाओं का प्रयोग करके विद्यार्थियों से सरल प्रश्न पूछे जा सकते हैं। उनके द्वारा इन प्रश्नों को दिए गए उत्तर अंग्रेजी की संरचनाओं को समझने की उनकी योग्यता के प्रमाण होंगे। उदाहरण के लिए:

छुट्टियों के दौरान आप कहाँ जा रहे हों? (Where are you going during the holidays?)

आप की कितने बहनें हैं? (How many sisters do you have?)

(ख) **लिखित संरचना परीक्षण**

अंग्रेजी में संरचनाओं की जाँच करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जा सकता है। इनमें से सबसे सामान्य है – बहु–विकल्प प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति, अव्यवस्थित क्रम में रखे गए शब्दों को व्यवस्थित करके समुचित वाक्य बनाना, गलती का पता लगाना इत्यादि। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

1 Renu is playing ____________ her doll. (fill in the blank)

A to

B with

C from

D by (multiple choice type)

2 Rewrite the sentence

The cat killed the mouse. (start with ‘The mouse)(transformation item)

3 house/this/red/is. (Make a sentence)(word order item)

इस प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग तब किया जा सकता है जब बच्चे पहले से ही विभिन्न संरचनाओं से अवगत हों अर्थात् तीसरी कक्षा से।

10.7.2 मौखिक कौशलों को जाँचना

मौखिक कौशलों में सुनने और बोलने के कौशल आते हैं जो कि भाषा सीखने और जाँच करने के अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू हैं। ये दोनों कौशल एक साथ ही चलते हैं इसलिए अलग–अलग इनका परीक्षण करना कठिन हो सकता है।

श्रवण का परीक्षण

श्रवण परीक्षण विद्यार्थी की मौखिक संदेशों की समझ पाने की योग्यता को जाँचने के लिए तैयार किए जाते हैं और ये परीक्षण प्रश्नों, अनुरोधों, कथनों, वार्तालाप के रूप में हो सकते हैं। अतः इन परीक्षणों में ध्वनि–विज्ञान के साथ शब्द भंडार और व्याकरण का परीक्षण भी शामिल होता है। सुनने की योग्यता की जाँच के लिए नीचे कुछ पद दिए गए हैं:

क) **निर्देश देना (Giving Directions) :** प्रारंभकर्ताओं की बोधगम्यता की जाँच करने के लिए इस प्रकार का परीक्षण प्रभावी हो सकता है। इस परीक्षण में कुछ मौखिक निर्देश दिए जाते हैं और विद्यार्थियों को उन्हें करके दिखाने को कहा जाता है। उदाहरण के लिए:

1) मुझे अपना पेन दो।

2) इस पुस्तक को बस्ते में रखों।

ख) चित्र–परीक्षण: श्रवण बोधगम्यता की जाँच करने के लिए चित्रों, मानचित्रों, तस्वीरों आदि का प्रयोग किया जा सकता है। इसमें बोलने और पढ़ने जैसे अन्य कौशलों की अपेक्षा नहीं की जाती।

चित्र–परीक्षण के एक प्रकार में, विद्यार्थियों को एक चित्र दिया जाता है और उस चित्र के बारे में कई कथन कहे जाते हैं। विद्यार्थी को यह निर्णय लेना होता है कि कथन सत्य है या असत्य और चित्र के नीचे वह सत्य के सामने T और असत्य के सामने वे F लिखते हैं:

1. गाएँ घास खा रही हैं।

2. भेड़ें खेत में चर रही हैं।

3. भेड़ें खेत में खेल रही हैं।

अन्य प्रकार के चित्र–परीक्षण में चार चित्रों का समुच्चय बच्चों को दिया जाता है और एक कथन बोला जाता है। विद्यार्थी को उस कथन में मेल खाने वाले चित्र की ओर इशारा करना होता है।

ग) **लघु कहानियों और अपठित गद्यांशों का प्रयोग करना:** विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार कहानी या अनुच्छेद चुना जाता है। विद्यार्थियों को उस अनुच्छेद पर आधारित प्रश्नों वाली शीट दी जाती है। कहानी/अनुच्छेद को पढ़ कर विद्यार्थियों को शीट पर उनसे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं।

इस परीक्षण को शुरुआत में सिर्फ मौखिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है अर्थात् विद्यार्थियों से मौखिक रूप से प्रश्न पूछकर विद्यार्थियों को उनके मौखिक रूप से उत्तर देने को कहा जा सकता है। इसमें बोलने के कौशलों का प्रयोग करना भी अपेक्षित होता है।

घ) **श्रव्य प्रत्यक्षों को परीक्षण**

उदाहरण के लिए:

Teacher: The concert was a great success.

Did I say great or greet?

Students: ………………………

Teacher: The refugee was caught trying to free the country.

Did I say flee or free?

Teacher: He spilt about a litre of milk.

Did I say spilt or split?

Teacher: Pour some milk on my porridge, please.

Did I say pour or bore?

बोलने का परीक्षण

बोलना एक जटिल कौशल है जिसमें कई योग्यताओं का प्रयोग करना शामिल है। वाक् प्रक्रिया के प्रमुख घटक हैं — उच्चारण, तनाव और अनुतान अथवा स्वर शैली (intonation), शब्द भंडार, संरचना और सामान्य धारा प्रवाह। बोलना काफी हद तक सुनने (श्रवण) की समझ (श्रवण बोध) पर निर्भर करता है। इससे स्थितियों को जाँचने में समस्याएँ आती हैं। हो सकता है बच्चा प्रश्न को न समझ पाने के कारण प्रश्न का उत्तर न दे पाए। बोलने का परीक्षण करने के लिए निम्नलिखित प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जा सकता है।

वस्तुओं और क्रियाओं या चित्रों का वर्णन करना : विद्यार्थी को कोई वस्तु या कोई क्रिया करके या कोई चित्र दिखाकर उसका वर्णन करने को कहा जाता है। विद्यार्थी द्वारा वर्णन किए जाने के दौरान उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द भंडार, संरचना और उच्चारण का आंकलन किया जा सकता है।

कहानी सुनानाः अध्यापक एक कहानी सुनाता है या विद्यार्थियों से एक कहानी पढ़ने को कहा जाता है। फिर उन्हें वही कहानी अपने शब्दों में सुनाने को कहा जाता है और इससे उनकी मौखिक योग्यता का आंकलन किया जाता है।

प्रश्नों का उत्तर देनाः अध्यापक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है और वे उनका उत्तर देते हैं। विद्यार्थियों के शब्द भंडार, संरचना, उच्चारण, स्वर शैली (intonation), और सामान्य प्रवाह की जाँच करने के लिए यह एक अच्छी युक्ति है। यह सुनने और बोलने के कौशल की जाँच करने का समाकलित परीक्षण है। इस युक्ति का प्रयोग मौखिक साक्षात्कार में किया जा सकता है। इसका प्रयोग कक्षा में औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूपों से किया जा सकता है।

प्रस्तुतीकरणः कभी–कभी विद्यार्थियों को कोई विषय देकर उन्हें इस पर 1/2 मिनट बोलने के लिए कहा जा सकता है। विषय विद्यार्थियों के अनुभव की सीमा के अंतर्गत ही होना चाहिए। उन्हें विषय पर बोलने की तैयार करने के लिए पर्याप्त समय भी दिया जाना चाहिए और तैयारी समूह में करने के लिए कहकर इसे सामूहिक गतिविधि भी बनाया जा सकता है। इस तरह ऊपर बताए गए बोलने के अन्य पहलुओं तथा सामान्य धारा प्रवाह का आंकलन किया जाता है।

ऊँचे स्वर में पढ़नाः उच्चारण संबंधी परीक्षण करने के लिए ऊँचे स्वर से पढ़ना अत्यंत उपयोगी परीक्षण है। संवाद, बातचीत के छोटे–छोटे अंश, नाटक के अंश या पाठ्यपुस्तकों के अनुच्छेद से कुछ अंश या कोई अन्य उपयुक्त सामग्री देकर बच्चे को उसे ऊँचे स्वर में पढ़ने को कहा जा सकता है। कुछ विशिष्ट वस्तुओं जैसे स्वरों या व्यंजनों का उच्चारण, स्वर शैली (intonation) पैटर्न, तनाव इत्यादि का आंकलन इसमें किया जा सकता है।

ऊपर वर्णित युक्तियों के अलावा, विद्यार्थियों के मौखिक कौशलों का आंकलन अनौपचारिक रूप से रोजमर्रा के शिक्षण के दौरान समय–समय पर अध्यापक द्वारा आयोजित वार्ता, जोड़े में किए गए कार्य, सामूहिक कार्य या पूरी कक्षा में किए गए कार्य के दौरान विद्यार्थियों की सहभागिता का अवलोकन करके किया जा सकता है।

एक–एक बच्चे की अलग–अलग मौखिक परीक्षा लेने में बहुत समय लगता है, अतः कई बार तो अध्यापकों को बच्चों को मौखिक कौशल के विकास के मूल्यांकन के लिए इसी अनौपचारिक आंकलन पर निर्भर करना पड़ता है। मौखिक कौशल को ग्रेड या अंक देने के लिए मौखिक प्रस्तुति के घटक वाले निम्नलिखित पाँच बिन्दु पैमाने का प्रयोग किया जा सकता है:

मौखिक प्रस्तुति के घटक	1 2 3 4 5
उच्चारण और स्वर शैली (intonation)	
प्रासंगिकता (relevance)	
समुचित शब्द भंडार और संरचना का प्रयोग	
सामान्य धारा–प्रवाह	

इस ग्रिड के अनुसार प्रत्येक घटक का मूल्यांकन इस पाँच बिन्दु–पैमाने पर किया जा सकता है। इससे 5 सर्वोत्तम के लिए और 1 सबसे खराब के लिए और 3 औसत के लिए है। विद्यार्थी द्वारा प्राप्त बिन्दुओं को जोड़कर अंक दिए जा सकते हैं।

पाँच बिन्दु वाले योग्यता निर्धारण रेटिंग (rating) पैमाने का प्रयोग बच्चों के सर्वांगीण मौखिक निष्पादन के ग्रेड देने के लिए भी किया जा सकता है। इस स्थिति में बच्चे के मौखिक प्रस्तुति के विभिन्न घटकों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी के सर्वांगीण निष्पादन के आधार पर एक ग्रेड दिया जा सकता है।

मौखिक कौशल का अत्यधिक विषयनिष्ठ रूप में मूल्यांकन करना सदा आसान नहीं होता तथापि, इन कौशलों का मूल्यांकन करने का सबसे विश्वसनीय तरीका। विद्यार्थियों के दैनिक मौखिक कार्य का अवलोकन करना और निरंतर उनकी प्रगति की जाँच करते रहना है।

10.7.3 पठन संबंधी परीक्षण

पठन में कई योग्यताएँ शामिल हैं जैसे शब्द संदर्भगतता कौशल (word attack skills), पढ़ने की समझ (comprehension), पढ़ने की गति और सरसरी नज़र से देखना (skimming) और छंद–विश्लेषण (scanning) तकनीकें। पढ़ने के लिए चूँकि विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ उपलब्ध हैं–जैसे समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, विज्ञापन, पत्र, डायरियाँ, मानचित्र, चार्ट, समय–सारणियाँ, सूचनाएँ, शब्द–कोश, यात्रा–गाइड, फार्म, इत्यादि। अतः पाठक में पढ़ने की विविध दक्षताएँ होना आवश्यक है। लेकिन अधिकतर विद्यालयों में पढ़ने का मूल्यांकन मुख्यतः समझ से किया जाता है।

पढ़ने में शामिल कुछ विशिष्ट कौशल इस प्रकार हैं:

- शब्दों, शब्द–पदों, वाक्यों के अर्थ को संदर्भ में ग्रहण करना
- अनुच्छेद में व्यक्त विचारों को ग्रहण करना
- अनुच्छेद में मुख्य शब्द, वाक्यांश (phrases) और वाक्य कौन–से हैं, इसका पता लगाना

- महत्वपूर्ण तथ्यों और विचारों का पता लगाना
- वस्तुओं, विचारों, घटनाओं, तथ्यों, चरित्रों इत्यादि के बीच संबंध का पता लगाना
- विचारों, तथ्यों इत्यादि के अनुक्रम का अनुभव करना
- वस्तुओं, विचारों, घटनाओं, तथ्यों, चरित्रों इत्यादि की तुलना करना
- संबद्ध शब्दों और विचारों के बीच भेद कर पाना
- विचारों, घटनाओं, चरित्र की विशेषताओं इत्यादि की व्याख्या करना
- अनुच्छेदों में दिए गए अर्थ, विचारों और संदेश से निष्कर्ष निकालना
- पात्र अथवा लेखक के भाव का अनुमान लगाना
- अंश के मुख्य विचार को समझ पाने तक पहुँचना
- घटनाओं, गतिविधियों, विचारों, भावनाओं, दृष्टिकोण इत्यादि का मूल्यांकन करना।

हमारे विद्यालयों में सामान्य पठन का परीक्षण करते समय अध्यापक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न देती है। ये वे प्रश्न होते हैं जिन पर कक्षा में पहले ही चर्चा हो चुकी होती है। परिणामस्वरूप, विद्यार्थी जो उत्तर देते है वे उनके रटे–रटाए उत्तर होते हैं या जो उन्हें कंठस्थ हो चुके होते हैं। ऐसे प्रश्नों से विद्यार्थी की पढ़ने की योग्यता की जाँच नहीं हो पाती। वे केवल उनकी पुनःस्मरण की शक्ति का परीक्षण करते हैं।

पठन की जाँच करने का सर्वात्तम तरीका है उन्हें अपठित गद्यांश देकर उनसे प्रश्न पूछना, अनुच्छेद विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार ही चुने जाने चाहिए।

एक अन्य बात जिसका उल्लेख करना आवश्यक है वह है, कई बार विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनके लम्बे–लम्बे उत्तर लिखने पड़ते हैं। कई विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर जानते हुए भी लेखन योग्यता खराब होने के कारण उन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते। अंत में उन्हें गलत वर्तनी या संरचनात्मक त्रुटियों के कारण दंड दिया जाता है। अतः व्यापक (comprehension) प्रश्न इस तरह से तैयार करना बेहतर होगा जिसमें लिखने की आवश्यकता न हो या बहुत कम लिखना पढ़े। व्यापक प्रश्नों के उत्तरों के लिए अंक देते समय मुख्य ध्यान जाँच किए जाने वाले बिन्दु पर होना चाहिए न कि वर्तनी या संरचनाओं पर।

पठन योग्यता का परीक्षण करने के लिए, वस्तुनिष्ठ प्रश्न–जैसे असत्य/सत्य, बहुविकल्प प्रकार, रिक्त स्थान की पूर्ति करने वाले, ऐसे प्रश्न जिसमें उत्तर अत्यंत लघु हो, पूरा करने और सूचना हस्तांतरित करने जैसे प्रश्न जिसमें विद्यार्थियों को तालिका या चार्ट में केवल ब्यौरे भरने संबंधी, सभी प्रकार के प्रश्न प्राथमिक स्तर पर उत्तम युक्तियाँ हैं। कक्षा चौथी और पाँचवी में 2–3 वाक्यों वाले लघु उत्तरीय प्रश्नों का प्रयोग भी किया जा सकता है। लेकिन अंक देते समय ध्यान रखना चाहिए कि उनकी वस्तुनिष्ठता ज्यादा से ज्यादा बनी रहे। वर्तनी या व्याकरण संबंधी गलतियों के लिए विद्यार्थियों को व्यर्थ में दंड नहीं देना चाहिए। यदि उत्तर का अर्थ निकलता है तो उसके लिए अंक दिए जाने चाहिए।

10.7.4 लेखन कौशलों की जाँच करना

लिखना एक जटिल क्रियाकलाप है जिसमें कई घटक शामिल हैं। ये हैंः

- **परिशुद्धता (accuracy) और उपयुक्तता (appropriacy) :** सही और उपयुक्त वाक्यों को लिखने के लिए समुचित शब्द भंडार का प्रयोग करने की योग्यता।

- **यांत्रिक कौशल (mechanical skills) :** उदाहरण के लिए उच्चारण और वर्तनी का प्रयोग।
- **विषयवस्तु प्रतिपादन (Treatment of content) :** शीर्षक के अनुरूप विचारों को बनाने की योग्यता
- **शैलीगत कौशल (Stylistic skill) :** तार्किक अनुक्रम में सामग्री को व्यवस्थित करना।

प्राथमिक स्तर पर, जब बच्चे पढ़ना और लिखना सीख ही रहे होते हैं, इस दौरान लेखन परीक्षण के लिए लम्बे अनुच्छेद लिखने के लिए नहीं दिए जाने चाहिए, केवल वाक्य लिखने के लिए दिए जाने चाहिए। पहली कक्षा में बच्चों का परीक्षण चित्रों के माध्यम से किया जा सकता है। बच्चों के चित्र दिखाकर उन्हें उनके नाम लिखने के लिए – जैसे बिल्ली, पेड़, बल्ला, कहा जा सकता है। इससे उनकी वर्तनी योग्यता के साथ–साथ उनकी लिखाई और शब्द भंडार का परीक्षण भी हो जाएगा।

दूसरी और तीसरी कक्षा में चित्र पर आधारित चार–पाँच वाक्य लिखने के लिए चित्रों का प्रयोग किया जा सकता है। उन्हें उनकी जानकार वस्तुओं या सरल वाक्य लिखने के लिए भी कहा जा सकता है जैसे, माँ, बिल्ली, कुत्ता इत्यादि।

जैसे–जैसे बच्चे ऊँची कक्षाओं में जाते जाएँ, उनके लेखन कौशलों के परीक्षण के लिए उन्हें निर्देशित लघु–लेखन परीक्षण दिए जा सकते हैं। इनके विषय विद्यार्थियों की अनुभव सीमा के अंदर ही होने चाहिए और उसमें प्रयुक्त शब्दों से विद्यार्थियों को परिचित होना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, चौथी या पाँचवी कक्षा में दिल्ली जैसे नगर में बागवानी पर अनुच्छेद लिखने के लिए कहना ज्यादा उचित नहीं होगा क्योंकि बागवानी कई विद्यार्थियों के अनुभव से बाहर होगी और हो सकता है कि वह बागवानी से जुड़े शब्दों से परिचित भी न हों।

निर्देशित रचनाओं/निबंधों के विषय (guided composition) कई तरीकों से निर्मित किए जा सकते हैं। एक कहानी की रूपरेखा देकर उसका विस्तार करने के लिए कहा जा सकता है। एक ऐसा संवाद दिया जा सकता है जिसमें एक व्यक्ति का संवाद दिया जाए और दूसरे व्यक्ति का संवाद विद्यार्थियों को लिखने के लिए कहा जाए। मार्गदर्शी निर्देशों के साथ निबंध के कई विषय/शीर्षक भी दिए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह कल्पना करना कि आप अपनी डायरी लिख रहे हैं। आज उद्यान में हुए अपने अनुभव को लिखें। I spent a wonderful evening in the park .... वाक्य से शुरुआत करें।

आप अपनी कालोनी के पार्क के बारे में भी लिख सकते हैं। वहाँ लगे पेड़ों और फूलों, घास पर भ्रमण कर रहे या बैठे वृद्ध लोगों और वहाँ खेल रहे बच्चों के बारे में लिख सकते हैं। उद्यान में आपने क्या किया और किस तरह आपको वहाँ मजा आया। इन सभी पर 50–60 शब्दों में लिखें।

यदि कक्षा में पत्र लिखने के बारे में सिखाया जा चुका है और विद्यार्थी पत्र–लेखन के प्रारूप से परिचित हैं तो उन्हें अपने दादा–दादी/नाना–नानी या किसी मित्र को एक सामान्य व्यक्तिगत पत्र लिखने के लिए भी कहा जा सकता है।

तथापि लेखन कार्य निर्धारित करते समय विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से निर्धारित समस्या के बारे में बताया जाना चाहिए और अध्यापक को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि विद्यार्थी भी कुछ कहें। इसलिए जब भी संभव हो, निबंध/बोधन परीक्षणों में सार्थक स्थितियाँ दी जानी चाहिए जैसी की ऊपर के शीर्षक में बताई गई हैं। एक अन्य बात यह

भी ध्यान में रखनी चाहिए कि परीक्षण के लिए दिया गया विषय अपठित होना चाहिए अर्थात् उस पर कक्षा में पहले चर्चा न की गई हो या पहले उसे कक्षा में न कराया गया हो। अन्यथा उत्तर को बच्चे नकल करके लिख लेंगे और बच्चों की लेखन की वास्तविक योग्यता का आंकलन नहीं हो पाएगा।

लघु–लेखन का आंकलन करना (Assessing Compositions) : लेखन के अंक देना, ग्रेड देनाएक अत्यंत कठिन कार्य है। यह अत्यधिक व्यक्तिपरक होने के कारण सबसे अधिक अविश्वसनीय है।

शोधों से ज्ञात होता है कि मूल्यांकनकर्त्ता अपने द्वारा दिए गए अंकों के प्रति परिवर्तनशील होते हैं। विद्यार्थियों को लेखन के गुण–दोषों पर अपने सहपाठियों से अक्सर सहमत होते हैं। इस व्यक्तिपरकता को कम करने के लिए कि एक विशिष्ट कक्षा के सारे अध्यापक एक साथ बैठकर लेखन में जिन बिन्दुओं पर ध्यान देना ह, उन पर विचारविमर्श करें, तब अंकों में होने वाली परिवर्तनीयता को कम किया जा सके।

लेखन का आंकलन करने के लिए दो विधियाँ प्रचलित हैंः एक वैश्लेषिक (analytical) विधि और दूसरी प्रभाव (impression) विधि हैं। वैश्लेषिक विधि में लेखन के विभिन्न कारकों, उदाहरण के लिए, विषयवस्तु की प्रासंगिकता, समुचित शब्द भंडार और संरचना, विषयवस्तु का संगठन इत्यादि के लिए विशिष्ट अंक निर्धारित किए जाते हैं और उसी के अनुसार निश्चित अंक दिए जाते हैं। प्रभाव विधि में लेखन के लिए 3 या 5 बिन्दु पैमाने पर ग्रेड दिए जाते हैं। (उदाहरण के लिए बहुत अच्छा, अच्छा, सामान्य, खराब, बहुत खराब)। यह ग्रेड समग्र लेखन के कुछ प्रभावों पर आधारित होता है। यह भी संभावना है कि लेखन एक पाठक को तो अच्छा लगे लेकिन हो सकता है कि दूसरे को वह अच्छा न लगे। यह संयोग की बात है कि किसी भी परीक्षक को वह विशिष्ट आलेख अच्छा लगता है या नहीं। इसलिए प्राथमिक स्तर पर वैश्लेषिक विधि का प्रयोग करना ही बेहतर है जो आदर्श रूप से कक्षा की स्थिति के लिए उपयुक्त होता है। निम्न स्तर पर लेखन के लिए अंक देने में, लिखने की कला अर्थात् वर्तनी और विराम चिन्हों को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाना चाहिए और परीक्षक को विषयवस्तु की प्रासंगिकता और विचारों के प्रयास की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए क्योंकि लेखन का लक्ष्य विद्यार्थी की भाषा का प्रयोग करने की योग्यता की जाँच करना है न कि उसकी व्याकरण संबंधी ज्ञान की यथार्थता को आकना। वर्तनी (spelling) और विरामचिन्ह लगाने (punctuation) का आंकलन अलग से किया जाना चाहिए।

10.8 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

भारत सरकार ने विद्यार्थी को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) पारित किया जिसमें प्रारंभिक अवस्था तक किसी भी औपचारिक/सार्वजनिक परीक्षण के स्थान पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE) का प्रयोग करने पर बल दिया गया "शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009" (Right to Education Act – RTE Act) की धारा 29(1) उल्लेख करती है कि

"पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रिया में बच्चे के ज्ञान की समझ और उस समझ को लागू कर पाने की बच्चे की योग्यता का सतत और व्यापक मूल्यांकन करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।"

उपर्युक्त सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में निम्नलिखित पर ध्यान दिया जाना चाहिएः

- आंकलन अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

- आंकलन का प्रयोग नियमित निदान के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धि और अध्यापन–अधिगम कार्यनीति को सुधारने के लिए किया जाना चाहिए और इसके बाद सुधार संबंधी उपाय किए जाने चाहिए।
- व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से संबंधित बच्चे की वृद्धि व विकास को जानना।
- ठोस निर्णय लें और विद्यार्थी, अधिगम प्रक्रिया और अधिगम परिवेश के बारे में सही समय पर निर्णय लें।
- आंकलन का गुणवत्ता नियंत्रण युक्ति के रूप में प्रयोग करते हुए निष्पादन के वांछित मानकों को बनाए रखना चाहिए।
- अध्यापकों और विद्यार्थियों को स्व–आंकलन की गुंजाइश प्रदान करना।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (CBSE) द्वारा विचारित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित करती है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने विद्यालय–आधारित मूल्यांकन में विद्यार्थी की वृद्धि के सभी पहलुओं को शामिल करने का प्रयास किया है। इस प्रकार न केवल शैक्षिक बल्कि सहशैक्षिक क्षेत्र जैसे जीवन–कौशल और अभिवृत्तियों और मूल्यों को भी विद्यालय–आधारित आंकलन में समाविष्ट किया गया है।

योजना में सुझाया गया है कि विद्यालयों को रचनात्मक आंकलनों के लिए अपने–अपने आंकलन करने चाहिए उन्हें केवल कागज़ और पेंसिल परीक्षाओं तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। रचनात्मक आंकलन के लिए विभिन्न साधनों और तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे मौखिक परीक्षाएँ, परियोजना कार्य, गतिविधियाँ/क्रियाकलाप, पहेलियों, सत्रीय कार्य, कक्षा कार्य और गृह कार्य इत्यादि।

रचनात्मक आंकलन ग्रेड केवल एक आंकलन के लिए नहीं होना चाहिए। इसमें पिछली अवधि में किए गए कार्य का औसत भी होना चाहिए।

समग्रतः मूल आशय यह है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना का लक्ष्य शैक्षिक वर्ष के प्रारंभ में ही रचनात्मक आंकलनों द्वारा अधिगम संबंधी कठिनाइयों का पता लगाकर अधिगम को सुधारना है और समय–समय पर अभिभावकों को इसके बारे में बताना है।

शैक्षिक वर्ष के दौरान विद्यार्थियों के लब्धि स्तर के बारे में उनके अभिभावकों को अवगत कराने की विशेष तौर से सलाह दी गई है ताकि विभिन्न विषय के क्षेत्रों में विद्यार्थियों के निष्पादन का बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर अभिभावकों के सहयोग से सुधारात्मक उपाय किए जा सकें।

कक्षा के अध्यापक को सर्वांगीण आंकलन में सकारात्मक और उल्लेखनीय उपलब्धियों के बारे में वर्णनात्मक टिप्पणियाँ देनी चाहिए और नकारात्मक आंकलन करने से बचना चाहिए (केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् अध्यापक नियमावली, पृ. 38)।

भाषा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

जहाँ तक भाषा के रचनात्मक आंकलन का संबंध है केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने यह अनिवार्य कर दिया है कि अध्यापकों को सत्र के दौरान कम से कम 3–4 अलग–अलग आंकलन साधनों का प्रयोग करना चाहिए। नीचे कुछ साधन दिए जा रहे हैं जिन्हें अध्यापक अंग्रेजी भाषा के परीक्षण के लिए प्रयोग कर सकते हैं ताकि विद्यार्थी की भाषा सीखने की प्रगति की व्यापक रूप में जाँच की जा सके:

- मौखिक और श्रवण (सुनना) – इसके लिए तैयार भाषण, बातचीत या संवाद इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।
- लिखित तर्क : विभिन्न किस्म के प्रश्न जैसे लघु प्रश्न, दीर्घ उत्तर प्रश्न, सृजनात्मक लेखन, रिपोर्ट, समाचार पत्रों के लेख, डायरी प्रविष्टियाँ, कविता इत्यादि
- वाक् परीक्षण – वाद–विवाद, वाग्मिता, सस्वर पाठ इत्यादि
- परियोजना कार्य – सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग सहित विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हुए सूचना एकत्रित करना, निगमनात्मक तर्क विश्लेषण और संश्लेषण और प्रस्तुतीकरण
- युग्म/समूह में कार्य करना .
- संगी साथियों द्वारा आंकलन

जैसा कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की अध्यापक–नियमावली में वर्णित किया गया है कि अध्यापक को भाषा का आंकलन करते हुए बच्चों को उनके कार्य के विशिष्ट अंश पर विशिष्ट प्रतिपुष्टि देनी चाहिए। उदाहरण के लिए निबंध में विराम–चिन्ह विधान, विषयवस्तु के संगठन और वाक्यों की रचना के लिए सुझाव या टिप्पणियाँ दी जा सकती हैं। अध्यापक विद्यार्थियों के साथ प्रशंसनीय कार्यों के उदाहरणों का आदान–प्रदान भी कर सकता है। उदाहरण की विशिष्ट प्रतिपुष्टि के आधार पर विद्यार्थियों को उनके कार्य को पुनः करने और उसमें सुधार करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में अध्यापक की भूमिका

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का मूल दर्शन है कि अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सबसे अच्छे से जानता है। कोई भी बाहरी एजेंसी शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और वृद्धि तथा उनके निष्पादन का आंकलन करने में उनके साथ न्याय नहीं कर सकती। इसके अलावा वर्ष के अंत में तीन घंटे की एक परीक्षा यह जानने के लिए पर्याप्त नहीं है कि बच्चे ने पूरे वर्ष क्या किया। आंकलन को अधिक विश्वसनीय और वैध बनाने के लिए विद्यार्थियों को वृद्धि के सभी पहलुओं – संज्ञानात्मक, भावात्मकता और मनोगत्यात्मकता का आंकलन करने के लिए अध्यापकों पर काफी विश्वास जताया गया है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की मूल विचारधारा यह है कि विद्यार्थी की शिक्षा के सभी पहलुओं में सुधार हो। अध्यापक और परीक्षण को कैसे एकीकृत किया जाए और अधिगम में सुधार के लिए आंकलन से प्राप्त परिणामों का प्रयोग कैसे किया जाए, ये कई ऐसी बातें हैं जिस पर अध्यापकों की ओर से बहुत समझ और जानकारी की आवश्यकता है। अध्यापकों को विद्यार्थियों की समस्याओं और उनकी शक्तियों के बारे में जानने के लिए स्व–आंकलन और समकक्षी (पीयर)–आंकलन का प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक जितना ज्यादा अपने विद्यार्थियों को समझ पाएँगे, उतना ही बेहतर वे अध्यापन में समायोजन कर सकते हैं ताकि बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकें।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की उपर्युक्त अपेक्षाओं के बारे में, अध्यापकों का एक वर्ग यह महसूस करता है कि इसमें अध्यापकों का कार्य भार बढ़ गया है। अब अध्यापकों को रचनात्मक गतिविधियाँ तैयार करनी होंगी, अतिरिक्त अध्ययन–अध्यापन सामग्रियाँ तैयार करानी होगी और अपने अध्यापन को बेहतर बनाने के लिए नियमित प्रतिपुष्टि का प्रयोग करना होगा, इस तरह उनका कार्य बढ़ जाएगा। लेकिन यह महसूस किया गया है कि यह शिक्षा की बेहतरी के लिए है। अध्यापक कम से कम पाठ्यपुस्तक पर आधारित शिक्षण से बाहर निकल कर आगे बढ़ेंगे और शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों को शामिल करने का प्रयास करेंगे। धीरे–धीरे वे नई चुनौतियों में भी सुखद अनुभव महसूस करेंगे।

10.9 सारांश

इस इकाई में, हमने आंकलन की भूमिका की चर्चा न केवल परीक्षण युक्ति के रूप में बल्कि अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में भी इसकी भूमिका की चर्चा की है। प्राथमिक स्तर पर विकास का एक बड़ा हिस्सा कक्षा में गतिविधियों के दौरान अध्यापक द्वारा बच्चों के अवलोकन पर भी निर्भर करेगा। औपचारिक परीक्षाओं के अतिरिक्त, बच्चों का अवलोकन करना अध्यापक को विद्यार्थी की उपलब्धि और प्रगति के बारे यथार्थ प्रभाव बनाने में सहायक होगा। अतः अवलोकन करना और रिकार्ड बनाना मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक होता है और इसे नियमित रूप से तथा अति सावधानी से करना चाहिए जैसा कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में सुझाया गया है। यह अध्यापक को अनुदेश की निगरानी, मूल्यांकन और उसे पुनः तैयार करने में सहायक होगा और यदि आवश्यकता पड़ें तो अधिगम में सुधार करके अधिगम को बेहतर बनाने में सहायक होगा। इस अवस्था में यही मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य होता है।

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) मूल्यांकन किसी भी अध्ययन–अध्यापन कार्यक्रम का अभिन्न अंग है। जब कभी कोई प्रश्न पूछा जाता है और उसका उत्तर दिया जाता है, तो यह मूल्यांकन प्रक्रिया ही है। मूल्यांकन द्वारा अध्यापक न केवल यह आंकलन करता है कि विद्यार्थी अध्यापन के उद्देश्यों को कितना प्राप्त कर पाया है बल्कि इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त साधनों और सामग्रियों, अध्ययन–उद्देश्यों, क्रियाविधियाँ कितनी कारगर व प्रभावशाली रहीं, इस बात का भी पता लग पाता है।

2) मूल्यांकन किसी भी अध्ययन–अध्यापन कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग है क्योंकि बिना अध्ययन और अध्यापन के मूल्यांकन संभव नहीं है। मूल्यांकन शिक्षण उद्देश्यों पर आधारित होता है क्योंकि उनमें वे वांछनीय व्यवहार हैं जिन्हें विद्यार्थियों में विकसित किया जाना अपेक्षित है। मूल्यांकन द्वारा हम यह निश्चित कर सकते हैं कि कैसे और किस हद तक ये उद्देश्य अर्जित किए गए हैं।

3) यह तीन प्रकार का होता हैः
   i) संकलनात्मक मूल्यांकन (Summative evaluation)
   ii) रचनात्मक मूल्यांकन (Formative evaluation)
   iii) नैदानिक मूल्यांकन (Diagnostic evaluation)

संकलनात्मक मूल्यांकन	रचनात्मक मूल्यांकन	निदानात्मक मूल्यांकन
1 यह सत्र के अंत में या पढ़ाए जाने वाले कार्यक्रम या पाठ्यक्रम के अंत में किया जाता है।	यह अधिगम– अध्यापन प्रक्रिया में ही अन्तर्निहित होता है और शिक्षण के दौरान किया जाता है।	नैदानिक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने में कमजोर होने के अन्तर्निहित कारणों का पता लगाना है, लेकिन शिक्षण से पूर्व भी इसकी आवश्यकता होती है ताकि विद्यार्थी की उपलब्धि के स्तर का पता लगाकर उसे उचित रूप से महत्व दिया जा सके।

2. इसके अंतर्गत विद्यार्थी की उपलब्धि की औपचारिक जाँच की जाती है।	रचनात्मक मूल्यांकन अनौपचारिक होता है।	
3 विद्यालयों में ली जाने वाली वार्षिक या अर्ध–वार्षिक परीक्षाएँ और सार्वजनिक परीक्षाएँ ऐसे मूल्यांकन के उदाहरण हैं।	प्रत्येक पाठ (इकाई) पढ़ाने के बाद अवलोकन, मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षाएँ इत्यादि जैसी बहु–तकनीकों का प्रयोग करके अनौपचारिक कक्षा परीक्षाएँ ली जा सकती हैं।	
4. इस प्रकार के मूल्यांकन का लक्ष्य विद्यार्थियों को ग्रेड, श्रेणी देना, वर्गीकृत करना, तुलना करना और उन्हें अगली कक्षा के लिए उत्तीर्ण करना है। इसका प्रयोग प्रमाणन के लिए भी किया जाता है; विशिष्ट पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए या छात्रवृत्तियों के लिए विद्यार्थियों के चयन करने के लिए प्रयुक्त होता है; और विद्यार्थियों के भावी प्रयासों में उनकी सफलता संबंधी पूर्वानुमान लगाने में प्रयुक्त होता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षण अंतरालों और कमजोर बच्चों का पता लगाकर विद्यार्थियों की प्रगति के संबंध में प्रतिपुष्टि देना है।	अध्यापक को शिक्षण–विधियों के संबंध में प्रतिपुष्टि प्रदान करना ताकि शिक्षण में सुधार लाया जा सकें, पाठ्यक्रम विषयवस्तु और शिक्षण सामग्रियों को प्रभाविता के संकेत भी प्रदान करता है।	नैदानिक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने या पढ़ने में कमजोर होने के अन्तर्निहित कारणों का पता लगाना है, ताकि विद्यार्थी की उपलब्धि के स्तर का पता लगाकर उसे उचित रूप से महत्व दिया जा सके; विद्यार्थियों के मूल व्यवहार (entry behaviour) को जानना बहुत आवश्यक है अर्थात् वे सीखने के लिए तैयार हैं या नहीं या उनमें निरंतर नया सीखने के लिए अपेक्षित कौशल और जानकारी है या नहीं; उसे निम्न निष्पादन वाले और मंद–विद्यार्थियों के लिए सुधारात्मक शिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने में सहायता करता है। इससे इन समस्याओं के कारण उत्पन्न होने वाली अधिगम विसंगतियों के लक्षणों का ठीक–ठाक पता लगाया जा सकता है।

4) सर्वप्रथम, नैदानिक मूल्यांकन शिक्षण देने के लिए प्रारंभिक आधार प्रदान करता है। विद्यार्थियों के मूल व्यवहार (entry behaviour) को जानना बहुत आवश्यक है अर्थात् वे सीखने के लिए तैयार हैं या नहीं या उनमें निरंतर नया सीखने के लिए अपेक्षित कौशल और जानकारी है या नहीं।

दूसरा, यह विद्यार्थियों के उस स्तर को जानने में सहायक होता है जिस स्तर तक विद्यार्थी पहले ही विशिष्ट इकाई को सीख चुके हैं। स्तर जानने के पश्चात्, अध्यापक यह सुनिश्चित कर सकता है कि वह जो पढ़ाने या सिखाने जा रहा है वह मात्र पुनरावृत्ति तो नहीं होगी या क्या वह ज्ञान के संवर्धन में सहायक होगा। इसे जानना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि जहाँ एक ओर उच्च शिक्षा विद्यार्थियों के लिए रोचक सिद्ध हो सकती है वहीं दोहराव विद्यार्थियों का ध्यान भंग कर सकता है जो कक्षा में अव्यवस्था या अनुशासनहीनता का कारण बन सकती है।

तीसरे, नैदानिक मूल्यांकन अध्यापक को विद्यार्थियों को उनकी दक्षता के स्तरानुसार वर्गीकृत करने में सहायता करता है और जो फलस्वरूप उसे निम्न निष्पादन वाले और मंद–अध्येताओं के लिए सुधारात्मक शिक्षण (अनुदेशी) कार्यक्रम प्रदान करने में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, बच्चों की कमजोरी के लिए शिक्षण (अनुदेशी) विधियाँ या सामग्रियों के अतिरिक्त अन्य कई और कारण भी हो सकते हैं। ये कारण शारीरिक, भावात्मक या सामाजिक कारण भी हो सकते हैं, जो सीखने में बाधक हो सकते हैं। निदान से इन समस्याओं के कारण उत्पन्न होने वाली अधिगम विसंगतियों के लक्षणों का ठीक–ठाक पता लगाया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) विद्यालय में मूल्यांकन का मूलभूत उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है, शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाना है और मूल्यांकन यह कार्य विद्यार्थी अधिगम, कक्षा शिक्षण, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम विषयवस्तु के औचित्य संबंधी प्रतिपुष्टि प्रदान करके करता है। जब विद्यार्थियों को ग़ैर–संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है तब यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में भी सहायता करता है।

2) विद्यालय में होने वाले व्यापक मूल्यांकन में मानव व्यक्तित्व के ग़ैर–शैक्षिक क्षेत्रों – जैसे विद्यार्थियों की सामाजिक–व्यक्तिगत विशेषताएँ (गुण), रूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, मूल्य और शारीरिक वृद्धि का मूल्यांकन शामिल है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में इनका निरंतर विकास व मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन से विद्यार्थियों के न केवल छिपे हुए व अज्ञात गुणों का पता चलता है बल्कि यह उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करता है। ये वे गुण हैं, जो विकसित करने आवश्यक हैं।

3) मूल्यांकन के सिद्धांत

   i) क्या मूल्यांकन किया जाना है, इसको निर्धारित व स्पष्ट करना

   ii) उद्देश्यों के संदर्भ में मूल्यांकन तकनीकों का चयन करना

   iii) व्यापक मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों का सम्मिश्रण

   iv) विशिष्ट मूल्यांकन युक्ति का सार्थक और प्रभावी रूप से प्रयोग करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों की शक्तियों और सीमाओं को जानने योग्य बनाना

   v) मूल्यांकन लक्ष्य का साधन है, न कि अपने आप में लक्ष्य है।

4) विद्यार्थियों की उपलब्धि के सभी पहलुओं का व्यापक ढंग से मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों की आवश्यकता होती है। चूँकि शिक्षण उद्देश्यों और विषयवस्तु के विभिन्न क्षेत्र हैं जिनके आधार पर विद्यार्थी की उपलब्धि का मूल्यांकन किया जाता है, ऐसे में विद्यार्थी की उपलब्धि का प्रभावोत्पादक मूल्यांकन करने के लिए केवल एक तकनीक पर्याप्त नहीं होती है। अतः मूल्यांकन को बोधगम्य बनाने के लिए, विभिन्न उद्देश्यों के परीक्षण के लिए उनकी उपयुक्तता के आधार पर विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन प्रक्रियाओं को अपनाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, विभिन्न तरीकों का मिला–जुला कर प्रयोग करना, मूल्यांकनकर्ता को विभिन्न उद्देश्यों के संबंध में विद्यार्थी की उपलब्धि के विभिन्न पहलुओं के बारे में और अधिक साक्ष्य प्रदान करता है और मूल्यांकनकर्ता को विद्यार्थी की उपलब्धि का ज्यादा संगत मूल्यांकन करने में सहायता करता है क्योंकि जितने ज्यादा साक्ष्य होंगे उतना मूल्यांकन बेहतर होगा।

बोध प्रश्न 3

1) अधिगम–अध्यापन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण पर मूल्यांकन (समीक्षा) आवश्यक है। अनुदेश प्रारंभ करने से पहले कार्यनीतियों, अधिगम सामग्री और यहाँ तक की शिक्षण के समुचित उद्देश्यों संबंधी निर्णय लेने के लिए विद्यार्थियों के मूल व्यवहार को निर्धारित करना आवश्यक है। अनुदेश के दौरान विद्यार्थियों की बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक वृद्धि का सतत मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि आप विभिन्न सुधारात्मक और संवर्धन कार्यक्रम संबंधी निर्णय समय पर ले सकें। इस उद्देश्य के लिए नैदानिक (diagnostic) और रचनात्मक (formative) मूल्यांकन साथ–साथ करने चाहिए।

   सत्र के अंत में, विद्यार्थियों को वर्गीकृत करने, ग्रेड देने, संवर्धित और प्रमाणित करने के लिए संकलनात्मक (summative) मूल्यांकन किया जाता है। यह मूल्यांकन अध्यापकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में निर्णय लेने में सहायता करता है।

2) विद्यालय में एक अच्छा मूल्यांकन कार्यक्रम उद्देश्य आधारित, सतत, व्यापक, सहयोगी, गतिशील अथवा सक्रिय के साथ निर्णयन प्रक्रिया होनी चाहिए। मूल्यांकन प्रक्रिया में निम्नलिखित आयाम होने चाहिएः

   i) मूल्यांकन उद्देश्य आधारित प्रक्रिया है

   ii) मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है

   iii) मूल्यांकन व्यापक प्रक्रिया है

   iv) मूल्यांकन एक सहयोगी प्रक्रिया है

   v) मूल्यांकन एक गतिशील प्रक्रिया है

   vi) मूल्यांकन एक निर्णयन प्रक्रिया है

बोध प्रश्न 4

1) भाषा एक कौशल आधारित विषय है जबकि सामाजिक विज्ञान विषयवस्तु आधारित विषय हैं और जिसमें प्रत्येक इकाई स्वतंत्र होती है, वह दूसरी इकाई से संबद्ध नहीं होती और पृथक इकाई का अध्ययन किया जा सकता है। भाषा–शिक्षण में कौशलों का उत्तरोत्तर विकसित किया जाना चाहिए, अर्थात् एक कौशल अगले कौशल का आधार होता है। ऐसी स्थिति में पाठ्यपुस्तक का प्रयोग संप्रेषण कौशलों को विकसित करने के माध्यम या साधन के रूप में ही किया जाता है और यह अपने आप मे लक्ष्य नहीं होता है अर्थात् भाषा–मूल्यांकन में पुस्तक की विषयवस्तु का ज्ञान महत्वपूर्ण नहीं है। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि क्या विद्यार्थी में सुनने, बोलने, पढ़ने (पठन) और लिखने (लेखन) योग्यताएँ विकसित हुई हैं या नहीं।

2) भाषा–अध्यापक हर समय अपने विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन स्वतः करता रहता है क्योंकि भाषा–शिक्षण में अधिकांश मूल्यांकन–युक्तियाँ शिक्षण युक्तियाँ भी होती हैं। भाषा के किसी विषय को पढ़ाने के लिए अध्यापक सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कई अभ्यास कक्षा में देती है, इन्हीं अभ्यासों का प्रयोग मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। तथापि, कुछ ऐसे भाग होते हैं जो शिक्षण अभ्यासों के लिए तो भले ही उपयोगी हों परंतु परीक्षण की दृष्टि में अच्छे या सही सिद्ध नहीं हो सकते। उदाहरण के लिए, तालिकाएँ शिक्षण अभ्यास हैं क्योंकि विद्यार्थी इसमें पैटर्न संबंधी

बहुत अभ्यास कर सकते हैं परंतु यह एक अच्छी परीक्षण युक्ति नहीं है क्योंकि उपलब्धि परीक्षण में हमें केवल विद्यार्थियों की विशिष्ट पैटर्न को जोड़–तोड़ करने की क्षमता के एक नमूने की आवश्यकता होती है न कि उसी पैटर्न के 5–6 वाक्यों वाले पूरे अभ्यास की।

इसी प्रकार, निबंध लेखन एक अच्छी परीक्षण युक्ति है लेकिन यह युक्ति लिखना सिखाने के लिए बहुत अच्छी युक्ति नहीं है। कक्षा में निबंध लेखन (composition-writing) सिखाते समय पूर्ण निबंध की अपेक्षा अनुच्छेद लिखना शायद अधिक उपयोगी होगा। चूँकि निबंध काफी लम्बा लिखा जाता है और इसमें अध्यापक को संशोधन बहुत करना पड़ता है, हो सकता है कि कक्षा में बार–बार टोकना या गलती बताना संभव न हो। इसलिए, भाषा–अध्यापक को परीक्षायुक्ति का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। यह युक्ति उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए और विषयवस्तु के क्षेत्रों की जाँच भी की जानी चाहिए।

10.11 पठनीय सामग्री

अग्रवाल, ममता, (1988), *ए हैंडबुक आफ इवैलूयेशन इन इंग्लिश,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

इग्नू, एम.ई.एस.सी. 005, खंड 6, इकाई 23 – कंसेप्ट ऑफ एजुकेशन इवैलूयेशन

मेहरंस, डब्ल्यू. ए. एवं लेहमैन, आई. जे. (1987), यूजिंग स्टैंडर्डाइस्ड् टेस्ट्स इन एजुकेशन, न्यूयार्कः लॉगमैन।